शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

साहित्य में नारी विषयक अवधारणा: ऐतिहासिक दृष्टि

चन्द्रकान्त तिवारी
सहायक प्राध्यापक
बीएसएइआई
फरीदाबाद, दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है किसी भी सभ्यता संस्कृति के स्तर, धारणाओं, भावनाओं आदि को समझने एवं उनका सही-सही मूल्यांकन करने के लिए आज जीवन व जगत से संबद्ध विभिन्न विषयों के साथ मानव स्वयं अध्ययन का विषय बन गया है। उसका अध्ययन करने वाले विभिन्न विज्ञानों का जन्म भी इसी कारण हुआ है। किसी भी समाज की प्रगति का मापदण्ड उस समाज में स्त्रियों की दशा से होता है। नारी मानव व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अतएव उसकी महत्ता का दिग्दर्शन कराने के लिए अनेक क्षेत्रों में उसका अनुशीलन हो रहा है। शरीर विज्ञान ,जीव विज्ञान , मनोविज्ञान , समाजशास्त्र आदि सभी नारी -जीवन संबंधी अध्ययन करके गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करने के साथ-साथ उसकी स्थिति हमारे सम्मुख रखते जा रहे हंै। जन्म से अभिशप्त, जीवन से संतप्त, अक्षय वरदानमयी नारी सदियों से समाज द्वारा उपेक्षित और उत्पीड़ित है, इसी कारण वर्तमान युग में, सभी विज्ञान नारी-गत तत्वों की मीमांसा करने में संलग्न हैं। नारी विषयक अवधारणा को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जाँचने और परखने के लिए यह जानना आवश्यक होगा कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की स्थिति में क्या परिवर्तन हुए।

प्रस्तावना

ऋग्वेदानुसार माता सर्वाधिक घनिष्ठ एवं प्रिय संबंधी है। भक्त परमात्मा को पिता की अपेक्षा माँ कहकर अधिक संतुष्ट होता है। अथर्ववेद में आदेश है कि, “माता के अनुकूल मन वाले बनों।”1 सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से वैदिक कालीन नारियों का समाज में सम्मानजनक स्थान था, तथा उन्हें अनेक महत्वपूर्ण अधिकार प्रदान किये गये थे । वैदिक काल व उŸार वैदिक काल का पुरुष मनोविज्ञान का ज्ञाता था उसने नारी की प्रशंसा में साहित्य का सृजन किया। यहाँ तक कह डाला कि जिस कुल में नारियों की पूजा होती है अथिति सत्कार होता है उस कुल में दिव्य गुण भोग और दिव्य गुण संतान का वास होता है जिस कुल में उनकी पूजा नही होती उस कुल के सुख प्राप्ति के सब उपाय निष्फल होते हैं-

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः।”2

प्राचीन साहित्य में नारी

युवती कन्या को दुहित् कहा जाता था। दुहिता का मुख्य कार्य दूध दुहना, दही से नवनीत अलग करना इसके अतिरिक्त सीवन कर्म व पानी भरने का कार्य भी कन्यायें किया करती थी। गृह कार्य में प्रवीणता प्राप्त करने के साथ-साथ ब्रहमचर्य समाप्त होते ही उनका पाणिग्रहण संस्कार होता था- “ब्रहम्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।”3 पत्नी के रूप में उसका स्थान महत्वपूर्ण था। वह अपने पति की चिरसंगिनी होती थी। “ऋषि प्रार्थना करता है कि उसे ऐसी पत्नी प्राप्त हो जो

उसके आनंद के क्षणों में साथ रहे। उसके मधुमय आलिंगन का स्वागत करे।"4 कई स्थलों पर उपमा के रूप में प्रेममयी नारी का सौंदर्य चित्रण है। एक स्थल पर कवि देवता की स्तुति करता हुआ कह रहा है, "जिस प्रकार कोई कन्या अपने पति के आगे झुक जाती है, में तुम्हारे सामने झुक रही हूँ।"5

धर्मशास्त्रों, पुराणों में भी नारी का संपूर्ण जीवन चित्रित हुआ है। एक ओर इनमें जहाँ नारी का गौरव मान है तो दूसरी ओर उसकी वास्तविक स्थिति को प्रकट किया गया है। इन ग्रंथों में स्त्री के अधिकारों की विस्तार से चर्चा की गई है। "इसमें विवाह को एक समाजिक व धार्मिक बंधन न मानकर गृहस्थ जीवन का सुभग सोपान माना गया है।"6 विधवा को परम् अमंगला माना गया है। उसका दर्शन ही अनिष्ठ का सूचक है -

"अमंगलेभ्यः सर्वेभ्यो विधवा स्यादमंगला
विधवा दर्शनात्यिद्धिः ववादि जातु न विद्यते।"7

"वैदिक साहित्य में नारी का अधिकांशतः देवी रूप में चित्रण हुआ है। वेदों में अदिति, ऊषा, इन्द्राणी, इला, दिति, सीता, सूर्या, वाक्, सरस्वती आदि देवियों का स्तवन हुआ है।"8

रामायण काल में संयुक्त परिवारों की व्यवस्था थी। "इस काल में नारी पत्नी और वधू के रूप में आदृत थी। वह पिता, पति अथवा पुत्र द्वारा रक्षणीय थी। पत्नी के रूप में पति की निजी संपत्ति समझी जाती थी। गणिका-रूप में नारी का चित्रण वेदकाल के समान इस समय भी मिलता है। दूसरी ओर सती-प्रथा को भी इस काल में प्रश्रय प्राप्त था।"9 "शुभ कार्यों के अवसर पर उनकी उपस्थिति को कल्याणकारी समझा जाता था। इसी शुभ रूप के कारण राम के राज्याभिषेक के समय कन्याओं ने ही उन पर जल का अभिषेक किया था।"10 "कोमलांगी सीता में कष्टों को सहन करने की सहजता भी उसी स्त्री शिक्षा का परिणाम है जो उन्हें बाल्यावस्था में प्राप्त हुई थी।"11

इसके अतिरिक्त आचार-व्यवहार, राजधर्म व शास्त्रधर्म आदि की शिक्षा भी कन्यावस्था में ही दे दी जाती थी। "पति-पत्नी का आदर्श व मर्यादापूर्ण प्रेम होता था। राम व सीता का आदर्श प्रेम रामायण में वर्णित है।"12

"रामायण के अनुसार प्रेम का एक रस रूप ही श्रेष्ठ है, अति प्रणय तथा अप्रणय दोनों ही अनुचित हैं। अविवाहित एवं असंयत प्रेम का वाल्मीकि द्वारा विरोध हुआ है। विवाह का चरम लक्ष्य, पत्नित्व की सफलता, सच्चे प्रेम और संतानोत्पादन में है।"13 इतना होने पर भी माता ने कभी अपनी संतान को कर्तव्य-विमुख नहीं किया। अपने दूध की लज्जा को हमेशा बनाये रखा। राम का राजतिलक होगा यह जानकर माता कौशल्या का हृदय असीम उत्साह से भरा है। राम जब उनसे मिलने आते हैं तो उन्हें गोद में बैठाकर गले से लगा लेती है सभी गहने व कपड़े उन पर न्यौछावर करती रहती है। तभी राम कहते हैं कि "पिता जी ने मुझे वन का राज्य दिया है तुम भी मुझे जाने की आज्ञा दो तब कौशल्या के हृदय में यह बात चुभती है कि वे ऐसे सूख गई जैसे बरसात के पानी से जवासा सूख जाता है। नेत्रों में जल भर आता है शरीर काँपता है फिर भी वे धैर्य नहीं छोड़ती है क्योकि दिव्य पुरुष की मर्यादामयी जननी है। इस समय विलाप करती हुई कभी सौतां के तिरस्कार को न सह सकने की बात कहती हैं तो कभी अपने व्रत इत्यादि अनुष्ठान निष्फल हो जाने पर दुःख प्रकट करती है।"14 किंतु माता कैकयी व पिता दशरथ दोनों की आज्ञा जानकर उन्हें कत्तव्यच्युत नहीं करती। "माता कौशल्या

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का हृदय तो वन में सुकुमार सीता के कष्टों को देखकर पुकार उठा था।"15

नारी संबंधी चित्रण महाभारत के मुख्य कथानक व इससे संबंध आख्यानों में मिलता है। "नित्यं निवसते लक्ष्मी कान्यकासु प्रतिष्ठता।"16

"नित्यं निवसते लक्ष्मी कान्यकासु प्रतिष्ठता।"16

"महाभारत में वर्णित कुंती और लोपामुद्रा की कथाओं से इस बात का स्पष्टीकरण हो जाता है कि वे किस प्रकार संकट काल में पिता की रक्षा करती हैं।"18 पतिव्रत धर्म, सतीत्व आदि की शिक्षा पारिवारिक जीवन मंे कन्या को दी जाती थी आगे चलकर गांधारी जैसी पतिव्रता नारियों के दर्शन होते हैं। "शिक्षा के संबंध में ठोस प्रमाण महाभारत में प्राप्त नहीं होते हैं। महाभारत में कहीं-कहीं पर शांता एवं कुंती की क्रीड़ा वर्णन प्राप्त होता है।"19 महर्षि दीर्घतमस के अनुसार "नारी को अविवाहित नहीं रहना चाहिये।"20 "यद्यपि विवाह को अनिवार्य संस्कार माना गया था, फिर भी कुछ नारियाँ आध्यात्म निष्ठता के कारण मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होकर मुनिव्रत धारण कर लेती थी।"21 व्यास जी ने भी कहा है- पुत्र के लिए माता का स्थान पिता से भी बढ़कर है, क्योंकि वह उसे गर्भ में धारण कर चुकी है तथा माता के द्वारा ही पालन-पोषण हुआ है। अतः तीनों लोकों में माता के समान दूसरा कोई गुरू नहीं है।

"पितुरप्यधिका माता गर्भधारण पोषणात्
अतोहि त्रिष लोकेपु नास्ति मातृसमो गुरूः।"22

मातृत्व नारी का सर्वोत्कृष्ट आभूषण है, इससे महाभारत की नारियाँ भी अछूती न रही। कुंती, गांधारी, माद्री आदि मातृत्व गुणालंकृता नारियाँ हैं। महाभारत में माता की सर्वोच्च स्थिति बतलायी गयी है जो हमारे भारत का प्राचीन आदर्श है-

"गुरूणा चै न सर्वेषा परमैको गुरूः।"23

"मातृविहीन व्यक्ति ही वार्धक्य, दुःख और संसार की निःसारता का अनुभव करता था।"24 माता एक बार वैधत्य को भी सह लेगी, निर्धनता को भी व्यतीत कर देगी पर अपने प्रिय पुत्रों का वियोग सहन न करेगी-

"न मां माधव वैधत्य नार्थवाशो न धैरिता
तथा शोकाय भवति यथा पुत्रैर्विना भव।"25

"गांधारी का चरित्र एक आदर्श पतिपरायणा के रूप में संमुख आता हैं। वे स्वयं धर्म का पालन करती थी, तथा यह आशा करती थी कि अन्य भी धर्म का पालन करें। उनका यह धर्मनिष्ठ भाव उस समय भी उनसे विलग न हुआ जब उनके सौ पुत्र काल के मुख में विलीन हो चुके थे।"26 "कुण्डेकेशा और विशाखा अविवाहित थीं। जातक कथाओं के अनुसार वधू युवती होती थी। थेरी गाथा में प्रेम विवाह का उल्लेख भी है।"28 आर्थिक क्षेत्र में भी नारी की स्थिति अच्छी थी। वह जीविका के लिए पुरुषों पर आश्रित नहीं रहती थी। "प्रारंभिक बौद्ध काल में ऐसी नारियों के दर्शन होते हैं जो अपने पति का सहयोग आर्थिक क्षेत्र में करने के लिए विश्वास दिलाती हैं कि वे ऊनी और सूती वस्त्रों का निर्माण कर अपने परिवार का पालन-पोषण कर लेंगी।"29

पुत्र विहीन पिता की संपत्ति की अधिकारिणी उसकी पुत्री होती थी। "थेरी गाथा में एक स्थान पर माता अपनी कन्या को भिक्षुणी होने से मना करती है। क्योंकि उसके कोई भाई नहीं था और उसका पति भिक्षु हो गया था वह कन्या को विवाहिता जीवन व्यतीत करने और तपस्वी जीवन के प्रति उदासीन होने की प्रेरणा देती है।"30 अतः बौद्ध काल में नारी की स्थिति में पर्याप्त परिष्कार हुआ। "णायकुमार चरिउ (नागकुमार चरित) में नागकुमार का विवाह दो

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नर्तकियों से हुआ था। उसके पिता ने उसे इस विवाह के लिए अनुमति दी थी। क्षत्रियों में मामा की पुत्री से भी विवाह संबंध स्थापित हो जाता था।"31

"समाज में कन्याओं के प्रति उपेक्षा भाव था। जन्म लेते ही कन्या माता-पिता को विवाद ग्रस्त कर देती थी। इसलिए लोग कन्या विहीन घर को अधिक सौभाग्य संपन्न समझते थे।"32 कन्या के प्रति यह भाव विवाह व दहेज प्रथा के कारण ही उत्पन्न हुए थे। इस काल के कवियों ने प्रकृति में भी नारी सौंदर्य के दर्शन किये हैं। "स्त्री शिक्षा का उस काल में विशेष प्रचलन नहीं था। परंतु ललित कलाओं, विशेषकर संगीत में कन्याओं की अधिक रूचि होती थी। वे गायन, वादन व नृत्य में निपुण होती थी।"33 नर्मदा नदी को अभिसारिका नायिका के रूप में चित्रित किया है। पृथ्वीराज रासो में "राजपूत सामंतों के अदम्य साहस, शूरता, प्रतिज्ञा पालन के साथ साथ वैभव विलास, क्रीड़ा विनोद तथा उनकी स्त्रियों की पवित्र धार्मिकता, पति परायणता, उच्च कर्त्तव्य भावना और हँसते-हँसते ज्वालाओं का आलिगंन करने की उत्कट उत्सुकता के सजीव चित्र हमें मुग्ध कर लेते हैं।"34 विद्यापति ने नारी को विभिन्न दृष्टिकोणों से निरखा-परखा है-"उन्होंने वयःसंधि, नख शिख वर्णन सद्यः स्नाताः मिलन, प्रेम प्रसंग, विदग्ध विलास, अभिसार प्रकृति तथा बसंत विरह आदि का चित्रण किया है।"35 वीर काव्य में नायिका भेद के वर्णन भी उपलब्ध होते हैं। "पृथ्वीराजरासों में चित्रलेखा वेश्या के प्रति सुल्तान गौरी के अनुराग का वर्णन है।"35 "नारी पतिव्रत धर्म का पालन किया करती थी। युद्ध क्षेत्र में पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी के सती होने का उल्लेख भी कई स्थानों पर है। विशेषकर राजपूत स्त्रियों में ही सती प्रथा प्रचलित थी। बीसलदेव की मृत्यु पर पटरानी के सती होने का वर्णन कवि ने किया है। इसी प्रकार पृथ्वीराज चैहान के बन्दी हो जाने पर संयोगिता तथा अन्य रानियों के सती होने का वर्णन भी चन्दबरदाई ने किया है।"36

हिंदी साहित्य में नारी

इतिहास के काल खण्ड में मध्यकाल की समयसीमा 1000 ई0 से 1761 ई0 के मध्य मानी जाती है। "हिंदुओं में स्त्रियों की स्थिति पहले की तुलना में गिर गयी थी। यद्यपि हिंदू स्त्रियों का परिवार में सम्मान था। वे शिक्षा प्राप्त करती थी। धार्मिक कार्यों में भाग लेती थी और उनमें से अनेक स्त्रियाँ शस्त्र-विद्या तथा विद्वत्ता में भी कुशल हुई तथापि उनकी व्यावहारिक स्थिति निम्न हो गयी और वे कई नवीन कुप्रथाओं से पीड़ित हो गयी। यद्यपि जनसाधारण में एक स्त्री और एक पुरुष के विवाह की प्रथा थी परंतु धनवान और सम्मानित व्यक्तियों में बहु-विवाह प्रचलित था। विधवाओं को पुनः विवाह का अधिकार न था। उन्हें या तो अपने पति की चिता के साथ जल जाना होता था अथवा मृत्युपर्यन्त संन्यासिनी का जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में सती-प्रथा का प्रचलन स्वभाविक था। मुसलमान हिंदू स्त्रियों को प्राप्त करने के लिए लालायित रहते थे और वे उनका अपहरण करने के लिए सर्वदा तत्पर रहते थे। इस कारण हिंदुओं में अल्पायु-विवाह और पर्दा-प्रथा बढ़ी। स्त्रियों की शिक्षा पर भी इसका प्रभाव पड़ा। वे स्वतंत्रतापूर्वक अपने घरों से बाहर नहीं जा सकती थी। इस कारण उनकी शिक्षा का प्रबंध घर में ही किया जाता था और यह सुविधा केवल धनवान व्यक्तियों की पुत्रियों को ही प्राप्त हो सकती थी। उस समय घर में लड़की का जन्म होना अशुभ माना जाता था जिसके

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परिणामस्वरूप बालहत्याएं भी की जाती थी। परंतु निम्न वर्ग इन कुप्रथाओं से पर्याप्त मात्रा में बचा रहा। उसमें पर्दा-प्रथा न थी तथा बहुत सी निम्न जातियों में तलाक और विधवा विवाह संभव थे। हिंदुओं में एक कुप्रथा देवदासी प्रथा भी थी जिसके कारण मंदिरों में सुंदर अविवाहित लड़कियों को देवदासी के रूप में रखा जाता था। हिंदू समाज में मुसलमानों के कारण कुछ अन्य परिवर्तन भी हुुए। एक मुख्य परिवर्तन हिंदू धर्म को छोड़े हुए व्यक्तियों को पुनः हिंदू धर्म में ले लेने का था। इसके अतिरिक्त हिंदुओं ने अपने एकाकीपन को छोड़कर परिस्थितियों के अनुसार अपने वस्त्रों, खानपान, व्यवहार और रीति-रिवाज में भी परिवर्तन किया। एक लाभदायक सुधार स्त्रियों की स्थिति में अवश्य इस समय में दुआ, स्त्री-धन के अतिरिक्त उनका अधिकार कुछ विशेष प्रकार की संपत्ति पर भी स्वीकार किया गया।"37 कामासक्त शूपर्णखा अपनी भावनाओं को रोक न सकी और छल-कपट पूर्ण वेश धारण करके राम-लक्ष्मण को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न अपनी सुंदरता के बखान से करती है-

"तुम सम पुरुष न मो सम नारी यह संयोग विधि रखा विचारी
मम अनुरूप पुरुष जगमाही देखऊ खोजि लोक तिहु नाही।"38 रीतिकाल में मध्यकालीन भक्त काव्य-धारा ने अपना स्वरूप परिवर्तित कर श्रृंगार एवं विलासिता का रूप ले लिया। बिहारी, घनानंद, देव, भूषण, मतिराम, केशव, बोधा, आलम, ठाकुर आदि कवियों ने विभिन्न स्तरों पर नारी के रूप-सौंदर्य को ही सहज अभिव्यक्ति दी है। नारी का मांसल सौंदर्य कवियों का आकर्षण बिंदु रहा। नारी का स्वकीया एवं परकीया रूप उभर कर आया। नारी का मातृ एवं कन्या पक्ष एकदम विलुप्त हो गया। "इस काल में कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने केे लिए नारी के रसिक, प्रिया स्वरूप को ही प्रस्तुत किया, वे नारी के आदर्श रूप को एकदम भुला बैठे। इस युग के कवियों की दृष्टि में नारी उपभोग की वस्तु थी। उनकी नारी हर कहीं उनका चीरहरण किया करती थी, जैसे वह कोई छाया गृहिणी हो।"39 चैतन्य और राधाबल्लभ संप्रदायों की गद्दियाँ रसिकों की रस क्रीड़ाओं को आश्रय देने लगी। राम का लोक रक्षक रूप भी उनकी काम क्रीड़ाओं में और सीता का आर्दश युग की श्रृंगारिकता में लुप्त होने लगा भक्तों का सखी रूप उनकी सेेण चेष्टाओं और स्थूल काम-वासना धर्म की विकृतियों के रूप में प्रकट होने लगी। जिस प्रकार राज-दरबारों में सामंत के मनोरंजन के लिए कामिनी की अंग भंगिमा और उसकी सौंदर्य विच्छितियाँ प्रकट हो रही थी, "इसी प्रकार बडे-बडे मंदिरों और मठों में विग्रह के नाम पर आचार्य और महंतों की स्थूल वासनाओं की परितृप्ति सौंदर्य-विलास के द्वारा होती थी। उनके विलास के लिये जो साधन एकत्र किये जाते थे, अवध के नवाब तक को उनसे ईष्र्या हो सकती थी, या कुतुबशाह भी अपने अन्तःपुर में उनका अनुसरण करना गर्व की बात समझते थे। मंदिरों और मठों में देव-दासियों का सौंदर्य और उनके घुंघरूओं की झंकार मठाधीशों की सेवा और मनोरंजन के लिए सर्वदा प्रस्तुत रहती थी।"40 द्विवेदीयुगीन काव्य में नारीत्व की उच्च भावना का विकास क्रमशः होता दिखाई देता है। द्विवेदी जी स्वयं नारी के प्रति अपनी आंतरिक पीड़ा को प्रबल शब्दों में तोलते हुए उसकी वकालत करते हैं-

"महामलिन से मलिन काम, हम करती हैं दिन-रात,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दुखी देख पति, पिता, पुत्र, व्याकुल हो करती कृशगात।
हे भगवान! हाय तिस पर भी, उपमा कैसी पाती,
ढोल तुल्य ताड़न अधिकारी, हमीं बनाई जाती हैं।"41

इनकी यशोधरा की अंतव्र्यथा इसलिए है कि उसे पथ की बाधा माना गया-

"सिद्धि हेतू स्वामी गये, यह गौरव की बात, पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि वे मुझसे कहकर जाते, कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते।"42 मैथिलीशरण गुप्त जी ने स्वयं "भारत-भारती" में नारी की दुर्दशा करने के लिए पुरुष को फटकारा है। उन्होंने कहा कि जहाँ नारी का आदर होता है। वही समस्त ऋद्धि-सिद्धियाँ रहती हैं-

"ऐसी उपेक्षा नारियों की जब स्वयं हम कर रहे,
अपना किया अपराध उनके शीश पर हैं धर रहे।
मांगे न क्यों हमसे भला फिर दूर सारी सिद्धियां,
पातीं स्त्रियाँ आदर जहाँ रहती वहीं सब ऋद्धियाँ।"43 'कामायनी' में नारी जीवन विषमता को समरस बनाने वाली श्रद्धा के रूप में अंकित किया है। "आँसू में नारी और पुरुष, प्रेमिका-प्रेमी रूप में स्थान पाते हैं। कवि ने अपने जीवन में जो अनुभव प्राप्त किये थे, उसी से उसने आँसू की नारी का निर्माण किया अपनी संपूर्ण मादकता को लेकर भी यह नारी केवल, वासना और ऐंद्रियता का प्रतीक बनकर नहीं रह जाती। अपने शारीरिक आकर्षण में भी वह गुणों से पूरित है।"44

नारी चित्रण में अश्लीलता के स्थान पर गंभीरता का समावेश निराला ने किया। उनकी नारी सौंदर्य सरोवर की एक तरंग है। जिसमें उद्दाम वेग और चंचलता नहीं, प्रत्युत एक संकुचित लज्जित गति है।

"सौंदर्य सरोवर की वह तरंग,
किंतु नहीं चंचल प्रवाह उद्दाम वेग
संकुचित एक लज्जित गति है वह।"45 निराला ने अपनी 'विधवा' कविता में तत्कालीन विधवा के रूप को साकार करते हुये मार्मिक शब्दों में व्यंजित किया है-

"वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी,
वह दीप शिखा सी शान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा-सी,
वह टूटे तरू की छटि लता सी दीन,
दलित भारत की ही विधवा है।"46 पंत जी ने नारी को एक परम भावना पुनीत सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया है-

"तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में गंगा स्नान
तुम्हारी वाणी में कल्याणी, त्रिवेणी की लहरों का गान।"47 महादेवी जी रहस्यवादी कवयित्री और नारी होने के नाते नारी के मूल भावों को समझने में अधिक सफल और चित्रण में अधिक स्वाभाविकता ला सकी है। उनकी आत्मा चिरंतन सुहागिनी रूप में प्रस्तुत हुयी है। महादेवी जी की नारी अपने-अपने प्रिय के काल्पनिक मिलन की स्मृति और प्रिय के अभाव में आदि से अंत तक एक गंभीर आह लिये अंदर ही अंदर सिसकती है। उनकी पीड़ा उनके प्रियतम में ऐसे धुल मिल गये है। कि दोनों में कुछ भी अंतर शेष नही है-

"पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की पीड़ा
तुमको पीड़ा में ढूंढा तुम में ढूढून्गी पीड़ा।"48

छायावाद के उत्तरार्द्ध कवियों में मोहन लाल महतो, भगवती चरण वर्मा, डा राम कुमार वर्मा, नरेन्द्र शर्मा और रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', माखन लाल चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं। डॉ.नगेन्द्र ने नारी के आंतरिक एवं बाह्य रूप को सजीव कर डाला है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"करूणा तेरे अश्रु बिन्दु से रसिक हृदय से भक्ति उदार,
संयम तेरे आत्म दमन से, हुआ सहन से क्षमा विचार,
सुधा अधर में, विष आँखों में, आँचल में पयस्विनी धार,
देखा इस छोटे से तन में, जग ने सजन और संहार।"49

प्रगतिवाद में नारी को लेकर कई परिवर्तन हुए। नारी पुरुष वर्ग की क्रूर वासना और अत्याचार का सदैव ग्रास बनती रही है। प्रगतिशील विचारों के धनी पंत जी वंदिनी नारी की मुक्ति का आग्रह करते हुए कहते हैं :

"मुक्त करो नारी को मानव, चिर वन्दिनी नारी को,
युग-युग की बर्बर कारा से जननि सखी प्यारी को।"50 धूमिल की कविताओं में नारी अनेक रूपों में प्रस्तुत की गयी है। नर-नारी के पारस्परिक वैधानिक-अवैधानिक संबंधों को प्रस्तुत करने वाले शब्दों से कवि किसी न किसी समस्या को उजागर करना चाहता है-

"औरतें योनि की सफलता के बाद, गंगा का गीत गा रही हैं,
मासिक धर्म रुकते ही सुहागिन औरतें सोहर की पंक्तियों का रस
उसका मर जाना पतियों के लिये अपनी पत्नियों के पतिव्रता होने की गारन्टी है।"51 "प्रेमचन्द पूर्व उपन्यासों में नारी की सामाजिक पराधीनता और तदुत्पन्न व्यथाओं को उपन्यासों का विषय बनाया। उन्होंने अपने दर्जनों उपन्यासों में वेश्या प्रथा, बाल-विवाह विधवा जीवन आदि की विस्तृत चर्चा की है।"52 नारी के विकास के लिए सबसे पहले तो वह उसे पूर्ण शिक्षित देखना चाहते हैं। "जब तक स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होगी और सब कानून अधिकार उनको बराबर न मिल जायेंगे तब तक महज बराबर काम करने से काम नहीं चलेगा।"53 हिंदी उपन्यासकारों में जैनेन्द्र "नारी के उस रूप को मान्यता नहीं देते जो हमारी सांस्कृतिक परंपरा को मान्य है। अनन्य सहिष्णुता से समस्त सामाजिक बंधनों और अत्याचारों को सहती हुई निर्बल किंतु मायामयी नारी जैनेन्द्र के लिये अज्ञात है। पर पाश्चात्य सभ्यता की उस जागृत नारी को भी वे मान्यता नहीं देते, जो पुरुष तथा समाज के बंधनों को खोलकर बल्कि तोड़कर अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करती है। उन स्त्रियों के जीवन का आधार प्रेम और सहयोग नहीं है। अतः स्त्री का वह रूप भी जैनेन्द्र के लिए वज्र्य है। उन्होंने जिस नारीे का चित्रण किया है। वह भव्य है पुरुष से अधिक बल रखने वाली है, प्रेम तथा अन्य सद्भावनाओं की अधिष्ठाती है। आत्मशक्ति में अग्रणय है और यह सब होने के कारण बहुत कुछ अलौकिक और अस्वाभाविक है।"54

आज वर्तमान की बात करें तो आज नारी मुक्ति, नारी विमर्श का युग है। भारत में स्त्री मुक्ति का आन्दोलन एक लम्बी यात्रा के बाद ऐसे मुकाम पर पहुँच गया है, जहाँ एक ओर उसकी सफलता के गीत गाये जा रहे हैं, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों की बात की जा रही है तो दूसरी ओर उस पर एक आयामी एवं पश्चिम आयातित होने का आरोप लगाया जा रहा है। आज नारी विमर्श, नारी चेतना, स्त्री अस्मिता, नारीवाद, स्त्रीवाद, नारी मुक्ति और न जाने ऐसे कई नामों पर एक विस्तृत चर्चा की जा सकती है या की जा रही है परन्तु परिणाम चर्चा के विपरीत हैं। स्थिति जस की तस है। आज आधुनिक युग में हिंदी की संपूर्ण विधाओं में नारी का चित्रण विभिन्न रूपों में किया गया है। नारी अब अबला नहीं है, वह

पुरुष समाज के संग कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तत्पर है।

निष्कर्ष

निस्संदेह नारी केवल मांस पिंड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शील भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है। यह सच है कि आज नारी उपेक्षित नहीं है। उसने अग्निपरीक्षा देकर अपने को कुंदन जैसा निखार लिया है। उसकी अतीत की पृष्ठभूमि गौरवपूर्ण तो है ही साथ-साथ आधुनिक विकास का वह एक उज्जवल आयाम भी है।

संदर्भ -

1. प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी; पृ0 52.
2. मनुस्मृति; अध्याय 3, श्लोक,56
3. अर्थववेद; 11/5/18.
4. ऋग्वेद; 10/85/37.
5. ऋग्वेद; 3/33/10.
6. मनुस्मृति; 3/75.
7. स्कंदपुराण; 3/75.
8. प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी; पृ0 50.
9. वही; पृ0 114
10. वाल्मीकि रामायण; युद्ध काण्ड, सर्ग 28/62
11. वाल्मीकि रामायण; अयोध्याकाण्ड, सर्ग 39/27 तथा सर्ग 18/8.
12. रामायण; 1/77/26 तथा 4/1/52
13. रामायण; 2/100/72
14. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे अयोध्याकाण्डे विशः सर्ग; पृ0 246/46 एवं पृ0 246 /52,
15. वही; पच्चाधिकशततमः सर्गः पृ0 457/26,
16. महाभारत; 13/11/14
17. महाभारत; 1/173/10
18. वही; 3/304 तथा 3/59
19. वही; 5/93/63 तथा 3/112/16.
20. वही; 1/114/36
21. वही; 12/325/103
22. बृहद्धमपुराण पूर्वखण्ड; अध्याय 2, श्लोक 3, व्यास-जाबलि- संवाद
23. महाभारत; 1/211/16
24. महाभारत; 13/268/30
25. वही; 5/90/69
26. वही; 4/11/17-6
27. वही; 19/2/68-40
28. थेरीगाथा; पृ0 47
29. अंगुत्तर निकाय; पृ0 293,
30. थेरी गाथा; पृ0 327
31. णायकुमार चरिउ (नागकुमार चरित); 7/4/5,
32. पउम सिरी चरिउ (पद्य श्री चरित); 4/2/18
33. पउम चरिउ; 14/3
34. नागकुमार चरित; 5/7/11 तथा 8/7/7
35. करकंड चरित; 7/1-4
36. करकंड चरित; 10/15/5
37. महापुराण; 542 /2-5
38. करकंड चरित; 9/6/6
39. नम्बुसामि चरिउ; 9/41
40. हिन्दी के गौरव ग्रंथः भूमिका में; पृ0 04
41. साहित्य संदेश; विद्यापति विशेषांक -जनवरी - फरवरी 1966
42. पृथ्वीराज रासो; छंद 201
43.पृथ्वीराजरासो; छंद 231 समय 36
44.पृथ्वीराज रासो; छंद-124-129
45.बीसल देवरासो; प्रथम खण्ड
46.पृथ्वीराजरासो; समय-61, छंद 1618
47. मध्यकालीन भारत; पृ0 333-334
48.रामचरितमानस; पृ0 514

ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2015

49.रामचरितमारस; पृ0 348

50.वही; पृ0 433

51.वही; पृ0 437

52.श्रीरामचरितमानस; पृ0 573

53. रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना; पृ0 425

54.रामचंद्रिका; पृ0 176

55.रस विलास; 1/56

56. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास; पृ0 18

57.रीतिकाल की भूमिका; पृ0 57

58.महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग; पृ0 71

59. यशोधरा; पृ0 सं0 39

60.प्रिय प्रवास; पृ0 253

61. भारत-भारती; पृ0 136

62.प्रसाद का काव्य; पृ0 196-197

63. परिमल; पृ0 134

64.राम की शक्ति पूजा; पृ0 53

65.अपरा; पृ0 57

66. पल्लव; पृ0 65

67.ग्राम्या; पृ0 15

68.वही; पृ0 20-21

69.सान्धयगीत; पृ0 51

70.यामा; पृ0 77

71.बनमाला; पृ0 95

72. युगवाणी; पृ0 58 -59

73.किरण-बेला; पृ0 83

74.नये काव्य नये मूल्य; पृ0 163

75.गोपा गौतम; पृ0 115

76.तारा सप्तक; पृ0 173

77.संसद से सड़क तक; पृ0 18

78. हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन; पृ0 196

79. प्रेमचन्द घर में; पृ0 260

80.हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन; पृ0 207